

Celebration of International Day for Biodiversity and 135th Birth Anniversary of revolutionary Rash Behari Bose

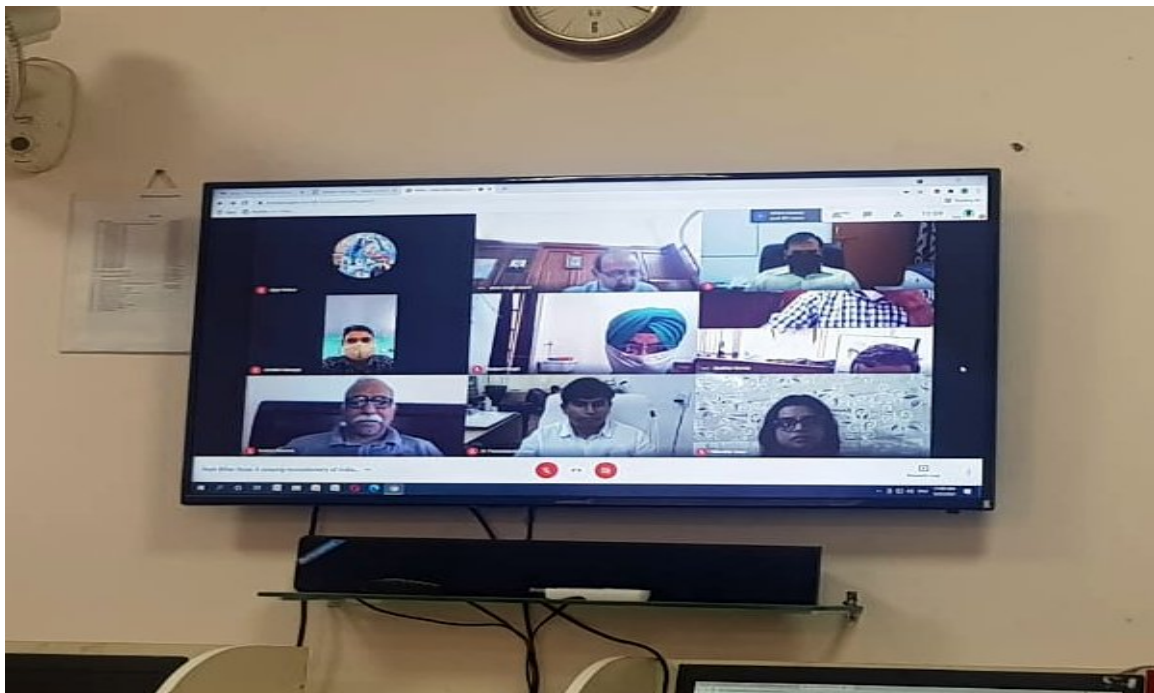
Forest Research Institute (FRI) Dehradun celebrated the 135th birth anniversary of revolutionary Rash Behari Bose on 25th May 2021 through virtual mode. Director General of Indian Council of Forestry Research and Education (ICFRE) and FRI Director Arun Singh Rawat was the chief guest on the occasion.

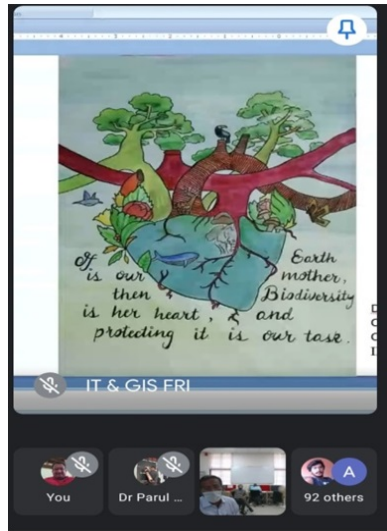
On this occasion, an online declamation contest was organised involving university students, where Mansi Singhal, Sudan Singh and Sanchi Pandey from FRI University bagged first, second and third prize, respectively. Class VIII student from St. Patrick's Academy Dehradun bagged for the best poster award among school children. Ms. Navya Bhandari Class X student from Ann Mary School Dehradun and Ms. Diksha Uniyal, Class XII, Convent of Jesus and Mary won second and third prize in this category.

Among university students Mr. Sachin Kumar and Ms. Garima Kumari from Forest Research Institute deemed to be university secured first and second prize whereas third prize was given to Ms. Nitika Bansal from Chandigarh University – The competition were judged by Sh. N. Bala, Dr. Tara Chand and Dr. Abishek Verma scientists from FRI Dehradun.

Sh. N. Bala Head, Forest Ecology & Climate Change Division and Dr. Vijender Panwar Coordinator ENVIS Centre of FRI thanked about one hundred participating officers, scientists, technical officers, research scholars and students to make online celebration a success.

Glimpses of the Event





एफआरआई में क्रांतिकारी रास बिहारी बोस का 135वां जन्मदिवस मनाया

संवाददाता
देहरादून। वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून द्वारा भारत के स्वतंत्रता संग्राम के क्रांतिकारी रास बिहारी बोस का 135 वां जन्मदिवस मनाया गया। ऑनलाइन मोड में आयोजित कार्यक्रम में रास रावत, महाविदेशक, भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून ने मुख्य अतिथि के रूप में कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

उनका जन्म 25 मई, 1886 को हुआ था। उनकी प्राथमिक शिक्षा अपने दादाजी की देखरेख में हुई। 1909 की प्रथम श्रेणी का रास बिहारी पर गहरा प्रभाव पड़ा। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि बिहारी का देहरादून, उनका छंद में आगमन प्रमथा नाथ टैगोर के आवास में गुरुशिष्य के रूप में हुआ। उन्होंने अपना कुछ समय वन अनुसंधान संस्थान में बिताया तथा वे घोसी गली, परलन बाजार, देहरादून में भी रहे। देहरादून की गलियारा, चहल का रास बो.एन. टैगोर गार्डन तथा वन अनुसंधान संस्थान आदि उनके पसंदीदा स्थान रहे। क्रांतिकारी दल के बंगाल खत्या ने उन्हें भारतीय सैन्य के सदस्यों को क्रांतिकारी चम में परिचित

करने के उद्योग से देहरादून भेजा। रास बिहारी ने खुद को सैन्य में भर्ती करने की कोशिश की, लेकिन वह सफल नहीं हो सका। इसके बाद उन्होंने वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून में काम किया। उन्होंने बंगाल और पंजाब के क्रांतिकारी नेताओं के साथ निकट संबंध बनाए रखा। एफआरआई में नौकरी उनके लिए बन बनाने की अपनी योजनाओं को अंजाम देने और उन चरणों से क्रांतिकारी आंदोलन को निर्देशित करने के लिए उपयोगी थी, विन पर सरकार को संदेह नहीं हो सकता था और आहतों से चला नहीं चला सकता था। जब वे एफआरआई में लिफ्ट के रूप में काम कर रहे थे, उन्होंने 1912 में लॉर्ड चार्ल्स इल्लिओ को हत्या के सचिव के लिए

37 दिन की छुट्टी ली। जब तक अंग्रेजों को एहसास हुआ कि साहित्य का मास्टमार्ड कौन था, वे जपान भाग गए। वहाँ श्रेष्ठ कला है कि उन्होंने 4 सितंबर 1906 को एफआरआई में कार्यरत किया और बाद में 65 रुपये के वेतन पर हेड क्लर्क के पद पर पदोन्नत हुए। मई 1914 में लंबे समय तक अनुपस्थित रहने के आधार पर उनको सेवा समाप्त कर दी गई। एफआरआई छोड़कर में एक सड़क का नाम रास बिहारी बोस के नाम पर रखा गया है। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के छात्रों के लिए ऑनलाइन भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जहां मंजरी सिंघल, सुधान सिंह, साची चंडे ने जयशः प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार

प्राप्त किए। स्कूली बच्चों की श्रेणी में पोस्टर प्रतियोगिता में सेंट पैट्रिक अकादमी देहरादून की अरुनी कला को छात्र साभमनी ने प्रथम पुरस्कार, एन मेरी स्कूल देहरादून की दमनी कला को छात्र नल्ल भंडारी ने द्वितीय और कॉन्वेंट ऑफ बोसिस एंड मैरी स्कूल की छात्राएँ कला को छात्र दीक्षा उर्वराल ने तिसरा स्थान प्राप्त किया। एन बाल, प्रमूख, वन परिधिभित्तिको एवं पर्यवरण प्रयाग और डॉ. विजयेंद्र पंचर, समन्यक एनिस सेंटर, वन अनुसंधान संस्थान ने ऑनलाइन समवेद को प्रस्तुत करने के लिए सभी अधिकारियों, वैज्ञानिकों, तकनीकी अधिकारियों, शोधार्थियों एवं छात्रों को धन्यवाद ज्ञापन किया।

वन अनुसंधान संस्थान ने मनाया श्री रास बिहारी बोस का 135 वां जन्मदिवस

देहरादून, संवाददाता। वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून द्वारा भारत के स्वतंत्रता संग्राम के क्रांतिकारी श्री रास बिहारी बोस का 135 वां जन्मदिवस मनाया गया। ऑनलाइन मोड में आयोजित कार्यक्रम में श्री ए.एस. रावत, महानिदेशक, भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून एवं निदेशक, वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून ने मुख्य अतिथि के रूप में कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

इस अवसर पर श्री ए.एस. रावत, जी ने अपने संबोधन में कहा कि स्व.

श्री रास बिहारी बोस का भारतीय क्रांतिकारियों में प्रमुख स्थान है जिन्होंने अंग्रेजी दासता से मुक्ति हेतु भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनका जन्म 25 मई, 1886 को हुआ था। उनकी प्राथमिक शिक्षा अपने दादाजी की देखरेख में हुई। 1789 की फ्रांस क्रांति का रास बिहारी पर गहरा प्रभाव पड़ा। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि बिहारी जी का देहरादून, उत्तराखंड में आगमन प्रमथा नाथ टैगोर के आवास में गृहशिक्षक के रूप में हुआ।

उन्होंने अपना कुछ समय वन अनुसंधान संस्थान में बिताया तथा वे घोसी गली, पल्टन



बाजार, देहरादून में भी रहे। देहरादून की गलियां, यहां का राजा पी.एन. टैगोर गार्डन तथा वन अनुसंधान संस्थान आदि उनके पसंदीदा स्थान रहे। क्रांतिकारी दल के बंगाल शाखा ने उन्हें भारतीय सेना के सदस्यों को क्रांतिकारी पंथ में परिवर्तित करने के उद्देश्य से देहरादून भेजा। रास बिहारी ने खुद को सेना में भर्ती करने की कोशिश की, लेकिन वह सफल नहीं हो सके। इसके बाद उन्होंने वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून में काम किया। उन्होंने बंगाल और

पंजाब के क्रांतिकारी नेताओं के साथ निकट संपर्क बनाए रखा। एफआरआई में नौकरी उनके

लिए बम बनाने की अपनी योजनाओं को अंजाम देने और उन जगहों से क्रांतिकारी आंदोलन को निर्देशित करने के लिए उपयोगी थी, जिन पर सरकार को संदेह नहीं हो सकता था और आसानी से पता नहीं चल सकता था। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के छात्रों के लिए ऑनलाइन भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जहां सुश्री मांसी सिंघल, श्री सुधान सिंह, सुश्री साची पांडे ने क्रमशः प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार प्राप्त किए। स्कूली बच्चों की श्रेणी में पोस्टर प्रतियोगिता में सेंट पैट्रिक अकादमी देहरादून की आठवीं कक्षा की छात्रा सुश्री शाम्भवी ने प्रथम पुरस्कार, एन मेरी स्कूल देहरादून की दसवीं कक्षा की छात्रा सुश्री नव्या भंडारी ने द्वितीय और कॉन्वेंट ऑफ जीसस एंड मैरी स्कूल की बारहवीं कक्षा की छात्रा सुश्री दीक्षा उनियाल ने तीसरा स्थान प्राप्त किया।

FRI marks 135th birth anniversary of the unsung revolutionary

INSTITUTE RECALLS RASH BEHARI BOSE'S REVOLUTIONARY ACTIVITIES WHILE WORKING AS A CLERK HERE

PNS ■ DEHRADUN

Forest Research Institute (FRI) celebrated the 135th birth anniversary of revolutionary Rash Behari Bose on Tuesday through virtual mode. Bose had also worked as a head clerk here at the institute during the freedom struggle. Director general of Indian Council of Forestry Research and Education (ICRE) and FRI director Arun Singh Rawat



was the chief guest on the occasion.

Rawat said that one of the most prominent Indian revolutionaries, Bose played a crucial role in the Indian freedom

movement from his part in the Delhi conspiracy to the formation of the Indian National Army. Bose joined the government press in Shimla as per his father's wish. He was appointed the copy-holder in the press and was able to master English and typewriting. Later he worked in Kasauli but with a mind full of enthusiasm and patriotism Bose was not happy with such kind of jobs. He came to Dehradun as a guardian tutor in the house of Pramantha Nath Tagore. The "master of

disguise", Bose also spent some time at the FRI in the Doon valley and stayed at Ghosi Gali in Paltan Bazaar. Having quit his home city of Kolkata due to the infamous Alipore Bomb Case (1908), Bose's tenure at FRI as a head clerk was the most defining moment in his revolutionary career.

The Bengal wing of the revolutionary party sent him to Dehradun with the purpose of converting members of the Indian army to a revolutionary cult. Bose tried to get himself enlisted in the army, but he could not succeed. He then joined the FRI and was trying to raise recruits from among the Bengali residents in Dehradun.

He maintained close contact with the revolutionary leaders in Bengal and Punjab. The job in the FRI was useful for him to execute his plans for

manufacturing bombs and to direct the revolutionary movement from places which the government did not suspect and could not easily locate.

While he was working as a clerk at the FRI, he took a 37-day leave for the bomb conspiracy to assassinate Lord Charles Hardinge in 1912. By the time, the British realised who the mastermind of the conspiracy was, he had escaped to Japan.

It is known that he joined FRI in September 4, 1906 and was later promoted to the rank of head clerk, drawing a salary of Rs 65.

His service was terminated on the grounds of prolonged absenteeism in May 1914. Not much is known about his stay in Dehradun. A road is named after Rash Behari Bose in FRI campus.

2 (Garhwal Post) www.garhwalpost.in Dehradun, 25 May, 2021 Dehradun

FRI celebrates the 135th birth anniversary of Rash Behari Bose

By OUR STAFF REPORTER

DEHRADUN, 25 May Forest Research Institute, Dehradun, celebrated the 135th birth anniversary of Rash Behari Bose here, today, in virtual mode. Arun Singh Rawat, Director General, Indian Council of Forestry Research & Education, and Director, FRI, was the Chief Guest.

Rawat recalled that Rash Behari Bose was one of the most prominent Indian revolutionaries. He worked in here India from British imperialism. From the Delhi conspiracy to the formation of the Indian National Army, Bose played a crucial role in the history of the Indian freedom movement.

Bose joined the Government press in Shimla at his father's wish. He was appointed the copy-holder in the press and was able to master English and typewriting. Later he worked in Kasauli, but he was not happy with such jobs. He came to Dehradun as a guardian tutor in the house of Pramantha Nath Tagore. He spent some time at the Forest Research Institute (FRI) in the Doon valley and stayed at Ghosi Gali in Paltan Bazaar. Having



in Bengal and Punjab. The job in the FRI was useful for him to execute his plans for manufacturing bombs and to direct the revolutionary movement from places which the Government did not suspect and could not easily locate. While he was working as a clerk at the FRI, he took 37 days leave for the bomb conspiracy to assassinate Lord Charles Hardinge in 1912. By the time, the British realised who the mastermind of the conspiracy was, he escaped to Japan. He then joined the Forest Research Institute. He tried to raise recruits from among the Bengali residents in Dehradun. He maintained close contact with the revolutionary leaders

service was terminated on the grounds of prolonged absence in May 1914. A road is named after Rash Behari Bose in the FRI campus. On this occasion, an online declaration contest was organised involving university students, in which Manoj Singhal, Sudan Singh and Saruchi Pandey from FRI University bagged first, second and third prizes, respectively. Sharekhan, Class VIII student from St Patrick's Academy, Dehradun, got the best poster award among school children. Navya Bhandari, Class X student of Anu Mary School and Divyika Ujjwal, Class XII,

Class VIII and Mary were the second and third prize in this category. Among university students, Sachin Kumar and Mr. Garima Kumar from Forest Research Institute secured first and second prizes, while the third prize went to Nikita Bansal from Chandigarh University. The competitions were judged by N. Bal, Dr. Sanjiv Choudhary and Dr. Abhishek Verma, FRI Scientists from FRI Dehradun. N. Bal, Head, Forest Ecology & Climate Change Division, and Dr. Vijendra Parmar, Coordinator, ENVIS Centre of FRI, thanked the participants.

स्वतंत्रता संग्राम सेनानी अमर शहीद रासबिहारी बोस को दी श्रद्धांजलि

देहरादून, 25 मई (स.र.) वन अनुसंधान संस्थान में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के सेनानी और अमर क्रांतिकारी रास बिहारी बोस के 135 वां जन्मदिन मनाया गया। मंगलवार को संस्थान परिसर में आयोजित कार्यक्रम के मुख्य अतिथि भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद के महानिदेशक डॉ अरुण सिंह रावत रहे। अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि रास बिहारी बोस महान क्रांतिकारी थे। आजादी की जंग में उनकी बहुत बड़ी भूमिका थी। रास बिहारी बोस ने कुछ समय एफआरआई वन अनुसंधान संस्थान में भी विद्यार्थ्य था। वे घोसी गली परलटन बाजार में रहते थे। क्रांतिकारियों ने उन्हें देहरादून भेजा था। संस्थान में उन्होंने

वन अनुसंधान संस्थान के कर्मचारी रह चुके हैं रासबिहारी



निष्पत्ति के तौर पर काम करते रहे। 1912 में लॉर्ड कार्ल हाइंडी की हत्या की कतिनायत रहे। उनके योगदान को हमेशा याद रखा जाएगा। परिसर में एक सड़क का नाम रास बिहारी बोस के नाम पर रखा गया है। इस मौके पर संस्थान की तरफ से विश्वविद्यालय के

विद्यार्थियों के लिए ऑनलाइन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसमें शाम्भवी ने प्रथम, नव्या भंडारी को द्वितीय दीक्षा उज्जवाल को तीसरा स्थान हासिल किया। कार्यक्रम में एन बाबल, डॉक्टर विवेक पंचर ने विचार व्यक्त किये।